इन्टरनेशनल स्कूल, पटना के वार्षिकोत्सव में बिहार के राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–03.12.2016, समय–अप॰ 03.00 बजे, स्थान–एस॰के॰ मेमोरियल हॉल, पटना)

इन्टरनेशनल स्कूल, पटना के 26वें वार्षिकोत्सव में प्रमुख रूप से उपस्थित बिहार के ग्रामीण विकास मंत्री श्री श्रवण कुमार जी, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री डॉ॰ अब्दुल गफूर जी, पूर्व मंत्री श्री शाहिद अली खान जी, विधायक श्री नारायण यादव जी, विधायक श्री शकील अहमद खान जी, डॉ॰ ए॰ए॰ हई जी, श्री परवेज आलम जी, श्री एस॰एम॰ खान जी, शिक्षक एवं विद्यार्थीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

नगर के प्रतिष्ठित इन्टरनेशनल स्कूल के '26वें वार्षिकोत्सव' में पहुँचकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह संस्था नगर की एक ऐसी शिक्षण संस्था है, जिसपर अभिभावकों का पूरा भरोसा रहता है। संस्था के संरक्षक डॉ॰ मुमताज हसन और प्राचार्या–सह–निदेशक श्रीमती फरहत हसन के नेतृत्व में संस्था निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इन्टरमीडिएट स्तर तक विज्ञान और वाणिज्य विषय में संचालित यह विद्यालय एक ऐसा विद्यालय है, जिसके परीक्षाफल बराबर उत्कृष्ट रहे हैं। संस्था का मोटो है–We Care. निश्चय ही यह संस्था अपने मोटो के अनुरूप अपने विद्यालय–परिवार के सभी सदस्यों का पूरा ख्याल रखती है, ऐसी मुझे जानकारी दी गई है।

प्यारे विद्यार्थियों! किसी भी संस्था का जब ''वार्षिकोत्सव'' आयोजित किया जाता है, तो इस अवसर पर संस्था की प्रगति–यात्रा के विभिन्न सोपानों और उसकी उपलब्धियों पर गौरवान्वित हुआ जाता है। किन्तु, उपलब्धियों पर गौरव–बोध के साथ–साथ, आगे की चुनौतियों पर

भी गंभीरता से विचार जरूरी होता है। आप सबको इस विद्यालय के समग्र विकास हेतु दृढ़संकल्पित होना चाहिए।

प्यारे बच्चों! शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ डिग्री लेकर अच्छा रोजगार प्राप्त करना मात्र नहीं है। मनुष्य को शिक्षा से संस्कार की प्राप्ति होती है, संस्कृति का बोध होता है और अपने राष्ट्र के प्रति मन में आस्था जगती है। महान संत स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि–''जो शिक्षा मनुष्य को जीवन–संग्राम में उतरने में समर्थ नहीं बना सकती, मनुष्य में चरित्र–बल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस का भाव नहीं जगा सकती, उसका कोई महत्व नहीं है। वस्तुतः हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।'' स्वामी जी शिक्षक के लिए आदर्श गुणों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि–''वे ही सच्चे गुरू हैं, जो अपने शिष्य की प्रवृत्ति के अनुसार, उसके अन्तर्निहित गुणों के विकास का प्रयास करते हैं।'' अर्थात् सच्चा गुरू वही है, जो विद्यार्थी को सिखाने के लिए विद्यार्थी की ही मनोभूमि में उतर आए और अपनी आत्मा अपने शिष्य की आत्मा के साथ एकरूप कर उसे सम्यक् ज्ञान प्रदान करे।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने शिक्षा को लेकर कई महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये हैं। उनका कहना है– ''सच्ची शिक्षा वही है, जो मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाये। उसके समग्र विकास में योगदान दे और उसे कर्त्तव्य–पालन के लिए प्रेरित करे।'' सामान्यतः शिक्षा को कक्षा में प्राप्त पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित कर देखा जाता है, लेकिन विभिन्न विषयों की पढ़ाई करते हुए डिग्री हासिल कर कोई रोजगार प्राप्त कर लेना ही, शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नही है। शिक्षा का परम उद्देश्य कहीं इससे अधिक काफी गुरूतर और महान है। गाँधीजी शिक्षा को धर्म और नैतिकता से पृथक् नहीं मानते। उनका स्पष्ट रूप से कहना है कि

''किसी भी समाज की शिक्षा उसके धर्म की शिक्षा के बिना निकम्मी है। धार्मिक–वृत्ति छात्रों को अपने माता–पिता, गुरूजन और समाज के श्रेष्ठजन के प्रति श्रद्धा के भाव रखने की प्रेरणा देती है। गाँधीजी धर्म को भी व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। वे मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानते हैं और नैतिकता को मनुष्य को दी जाने वाली शिक्षा का अविभाज्य अंग मानते हैं। गाँधीजी स्वतंत्रता, समानता, न्याय आदि को व्यक्ति के समग्र विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक मानते हैं। उन्होंने एक बार विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा था कि–''जिस विद्या को ग्रहण करने से हमारी स्वतंत्रता हमसे दूर जाती दिखाई दे, उस विद्या का त्याग करना चाहिए। युवा–पीढ़ी यदि शौर्यहीन बन जाएगी, तो विद्या प्राप्त करके भी यह क्या कर लेगी? अतः विद्या–प्राप्ति भी मानवता और नैतिकता की रक्षा से जुड़ी होनी चाहिए।''

प्यारे बच्चों! रामायण, महाभारत, वेद–पुराण, कुरान, बाईबिल आदि सारे धार्मिक–ग्रन्थ हमें सदाचार और मानवता के पथ पर चलने की ही प्रेरणा देते हैं। आधुनिक भारत का महान ग्रन्थ ''भारतीय संविधान'' भारतीय संस्कृति और जीवन का सर्वश्रेष्ठ मर्यादा–ग्रन्थ है। हमें इसकी 'प्रस्तावना' को अपने जीवन में हृदयंगम कर लेना चाहिए। इस 'प्रस्तावना' में ही समानता, स्वतंत्रता, शांति, न्याय एवं धर्म–निरपेक्षता आदि जिन बातों का उल्लेख है, वे हमारे जीवन के नियमन के लिए बेहद जरूरी हैं। संविधान की 'प्रस्तावना' का शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शामिल होना जरूरी है, जिस पर विद्यालयों में समय–समय पर परिचैर्या हो, ताकि शिक्षा–जगत् संविधान में समाहित आदर्शों को आत्मसात कर सके।

मेरा सुझाव होगा कि आप पाठ्यक्रम की पुस्तकों के साथ–साथ, महापुरूषों की जीवनियाँ, भारतीय इतिहास की विरासतों और संस्कृति से जुड़ी बातों का भी गहन अध्ययन करते रहें। आप कला,

विज्ञान, वाणिज्य, विधि–जिस किसी भी संकाय में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते है, उसका विशेष अध्ययन करते रहें। परन्तु भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों एवं विश्व के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों पर भी अपनी खुली नजर जरूर रखें, ताकि आपका सर्वांगीण विकास होता रहे। आधुनिक युग ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी विकास का युग है। 'सूचना क्रांति' और 'तकनीकी विकास' के आज के युग में आप वैज्ञानिक विकासपरक गतिविधियों से पृथक् रहकर समुचित रूप से लाभान्वित नहीं हो सकते। किन्तु, साथ ही मेरा अनुरोध आपसे यह भी होगा कि आप वैज्ञानिक और भौतिक विकास के इस दौर में भी अपने राष्ट्र की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ज्ञान–सम्पदा का भी पूरा ख्याल रखें। हम इसी सम्पदा के बल पर विश्व–गुरू थे और आगे भी हमारा यही वैभव पूरी दुनियाँ का हमें सिरमौर बनाएगा।

आज आपके इस विद्यालय के 'वार्षिकोत्सव' के अवसर पर मैं पुनः आप सबको हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे बताया गया है कि आपके विद्यालय के कई तेजस्वी छात्र, सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत रहकर, इस विद्यालय और इस इलाके का नाम रोशन कर रहे हैं। इस विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

आइए, हम सभी मिलकर एक ऐसे सुन्दर प्रान्त और देश के नवनिर्माण का संकल्प लें और भारत के संविधान में वर्णित लक्ष्यों, जैसे–समाज में सुख–शांति, विद्या, साधना, सद्भावना, प्रेम, त्याग, वंधुत्व, समानता और न्याय को प्राप्त करने में सदैव तत्पर रहें। एक बार पुनः आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।